भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला–४९

बीसवीं शताब्दी का संस्कृत लघुकथा-साहित्य

रुचि कुलश्रेष्ठ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

मानित विश्वविद्यालय

जनकपुरी, नई दिल्ली - ११००५८

भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला-४९

बीसवीं शताब्दी का संस्कृत लघुकथा-साहित्य

रुचि कुलश्रेष्ठ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनकपुरी, नई दिल्ली - ११००५८

आमुखम्

भाषा हि नाम विचारसम्प्रेषणमाध्यमम्। तच्च विचारसम्प्रेषणमाध्यमं विचारकाणां विचारपद्धतिमनुसरतीति जानन्त्येव विदितवेदितव्याः। विचारपद्धतिश्च यदि रसात्मिका स्यात् तर्हि तदभिव्यक्तिपरकं वाक्यजातं काव्यत्वेनाभिधीयत इति भारतीयकाव्यशास्त्रविदां मतिः। काव्यं चात्मानं विविधविधायामभिव्यनक्ति। सर्वा च सा विधा साहित्यपदेन जगति विश्रुता।

संस्कृतस्य पुरातनी साहित्यसृजनपरम्परा कियद्विपुलेति नास्ति कस्याश्चन पौनरुक्तेरावश्यकता। परमयमत्यन्तं प्रमोदस्य विषयः यत् संस्कृतस्य पठनपाठनव्यवस्थायाः सञ्जातेऽपि शैथिल्येऽद्यापि संस्कृतं साहित्यत्वेन वर्तमानप्रवर्तमानभाषाभिः सममेवात्मानमभिव्यनक्ति। अद्यतनयुगे विरचिता अनेकसंस्कृतसाहित्यिककृतय इमामुक्तिं प्रमाणीकुर्वन्ति।

आधुनिकसंस्कृतसाहित्यस्य विविधास्वभिव्यक्तिषु लघुकथानां विशिष्टं स्थानं वर्तते। आसु लघुकथासु वर्तमानसाहित्यस्य प्रवृत्तयः प्रवर्तमाना अवलोक्यन्ते। डॉ० रुचिकुलश्रेष्ठलिखितः प्रकृतप्रबन्धोऽमुमेव विषयमवलम्ब्य स्वकीयमध्ययनं प्रस्तौति। तच्चाध्ययनं स्वातन्त्र्य-स्वर्णजयन्ती-ग्रन्थमालानां प्रकाशनप्रसङ्गे प्रासङ्गिकतां भजत इति कृत्वा राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः) अस्य प्रकाशनं सहर्षमङ्गीकरोति। अस्य प्रकाशनविधावस्माकं शोध-प्रकाशनविभागस्य सहायककुलसचिवानां श्रीमतां प्रकाशपाण्डेयानां गुरुतरमवदानमस्तीति सन्ति ते धन्यवादभाजः। शोधकर्त्री च पौनःपुन्येन स्वकीयसारस्वतश्रमस्य कृते साधुवादमर्हतीति तस्यै स्वस्ति ब्रूते राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्।

परिमलप्रकाशनमधुना संस्कृतस्य सुविदितप्रकाशनसंस्थानमस्ति। तदीयं संस्थानमस्य ग्रन्थस्य मुद्रणादिकार्यं सम्यक् व्यवस्थापितवदिति तस्याधिकारिणामपि धन्यवादाः संस्थानेनाभिव्यज्यन्ते।

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री

कुलपतिः

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
आमुखम्		iii
पुरोवाक्		iv-vi
अनुक्रमणिका		vii
प्रथम अध्याय - कथा का स्वरूप एवं परम्परा		**१-४४**
१.०	भारतीय कथा का युग संचरण	१
१.१	आधुनिक संस्कृत कहानी का उदय	७
१.२	स्वाधीनता पूर्व संस्कृत कथा साहित्य	८
१.३	स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत कथाएँ	८
२.०	कथा शब्द का व्युत्पत्ति	१२
२.१	कथा के विभिन्न भेद	१८
३.०	प्राचीन कथा और आधुनिक कथा साहित्य में वैषम्य	३०
४.०	लघु कथा के विषय में आधुनिक दृष्टिकोण	३३
५.०	लघु कथा साहित्य का समाजशास्त्र एवं समाजशास्त्रीय महत्त्व	३५
६.०	आधुनिक संस्कृत लघु कथा साहित्य में युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक-आर्थिक चेतना	३९
द्वितीय अध्याय- साहित्य का समाजशास्त्र एक सैद्धान्तिक विवेचन		**४५-६६**
१.०	समाजशास्त्र की अवधारणा एवं स्वरूप	४५
२.०	साहित्य और समाज का महत्त्व	४९
३.०	साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की उपादेयता	५४
४.०	समाजशास्त्रीय अध्ययन का मुख्य आधार	५७
४.१	समाज	५८
४.२	राजनीति	५९
४.३	अर्थव्यवस्था	६१
४.४	धार्मिक परिवेश	६२
४.५	सांस्कृतिक चेतना	६४
तृतीय अध्यायबीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य का सामान्य परिचय		**६७-१२५**
१.०	कथामुक्तावली	६७

पण्डित को जगाया तो वह क्रोधित हो बोला, मैं स्वप्न में शिव से तुम्हारे लिए श्रेष्ठ पुत्र की कामना कर रहा था। तुमने विघ्न डाल दिया। यजमान को रोता देख उसने कहा- उचित समय आने पर दोबारा अनुष्ठान करूँगा और यजमान द्वारा लायी गयी सामग्री ले कर चला गया।

'श्रमदेवी' में लक्ष्मी तथा उसका पति धन कमाकर गाँव के लोगों की तन, मन, धन से सेवा करते हैं। धनखर्च के बाद भी एक पुत्र की मृत्यु के दुख से उसके पति की भी मृत्यु हो जाती है। गाँव के लोग धन माँगते हैं। वह घरेलू दाल पापड़ अचार का व्यापार करके कर्ज चुकाती है तथा गाँव के अनाथों और विधवाओं को रोजगार देती है। एक दिन लक्ष्मी के आत्महत्या कर लेने पर एक पत्र मिलता है कि अस्वस्थता के कारण उसका शरीर साथ नहीं देता और वह किसी पर भार नहीं बनना चाहती और मर जाती है। उसकी मृत्यु के बाद उसका धन अनाथों तथा विधवाओं में बाँट दिया जाये।

डॉ० पुष्कर दत्त शर्मा जी द्वारा सम्पादित 'राजस्थानस्याधुनिका: संस्कृत कथालेखका:' में आपकी 'सापराध' नामक कथा संगृहीत है।

'सापराध:' में विपिन बिहारी नामक व्यक्ति को बैंक में कार्यरत होते हुए एक लाख रूपये चोरी करने की सजा के रूप में जेल भेज दिया जाता है। वह छल से उचित व्यवहार के लिए जेल से तीन वर्ष की सजा काटने से पहले ही छूट जाता है।

सिद्धेश्वरी वैभवम् : 'सिद्धेश्वरी वैभवम्' के प्रसिद्ध रचनाकार 'श्री द्वारका प्रसाद शास्त्री' का जन्म १५ मई १९३० ई० को ग्राम पत्रालय बूढ़नपुर जिला रायबरेली में हुआ था। आप स्वर्गीय पं० रामेश्वर प्रसाद एवं पार्वती देवी त्रिपाठी के पुत्र हैं। आपने एम०ए० शास्त्री एवं धर्मरत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। सन् १९५० ई० में आपने श्रीमती सिद्धेश्वरी त्रिपाठी के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया।

आपने संस्कृत भाषा में लगभग बारह कृतियाँ लिखीं। आपके साहित्य में गद्य, पद्य, कथा, उपन्यास, लेख आदि सभी विधाएँ सम्मिलित हैं, जिसे देखकर लगता है कि शास्त्री जी ने अपने साहित्य को शायद ही किसी विधा से अछूता रखा है। १३ मई २००० को आपको १९९७ ई० में प्रकाशित 'रामं वन्दे

साहित्य का आधुनिक काल अनेक दृष्टियों से विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस काल में गद्य और पद्य दोनों की ही प्रतिष्ठा हुई है। प्राचीन साहित्य का गौरव पद्यात्मक रचनाओं तक सीमित रहा, आधुनिक साहित्य गद्य की विभिन्न विधाओं, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण और इतिहास, भूगोल, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों के वाङ्मय से सम्पन्न हुआ और निरन्तर हो रहा है।

बीसवीं शती में संस्कृत कथा विधा का विशेषरूप से लघु-कथा का समुचित विकास हुआ है। इस शती में अनेकानेक संस्कृत कथाओं तथा उनके संग्रहों का पर्याप्त प्रकाशन हुआ है जिनमें पर्याप्त मानव सम्बन्ध, मानव और उसके समाज का जीवन परिलक्षित एवं प्रतिबिम्बित हुआ है। वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हो रहे परिवर्तनों के अध्ययन हेतु पर्याप्त सामग्री भी लघु कथा साहित्य से उपलब्ध होती है। आज की वैज्ञानिक समृद्धि को देखते हुए, एवं मानवीय मूल्यों की अपेक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए संस्कृत वाङ्मय में लघुकथाओं का विविध दृष्टिकोणों से मूल्यांकन करके नये समाधान समाज के सम्मुख हम प्रस्तुत कर सकें यही हमारे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। इन सभी विषयों को ध्यान में रखकर इस ग्रन्थ को आठ अध्यायों में विभाजित किया है। यह ग्रन्थ भावी छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणा स्रोत तथा पथप्रदर्शक बनेगा।